इतिहास से भयाक्रान्त भगवा गिरोह

अभिनव

संघ परिवार इतिहास से भयाक्रान्त है। अपनी राजनीतिक शाखा भाजपा की सत्ता पर पकड़ के बूते वह बदहवास होकर इस भय से पीछा छुड़ाने के लिए हरमुमकिन कोशिश में जुटा हुआ है। सभी अकादमिक संस्थाओं में अपने बौद्धिक टट्टुओं को घुसाना, स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रमों में फेरबदल करना और समूचे सामाजिक -सांस्कृतिक ताने-बाने को हिन्दू साम्प्रदायिक फासीवादी रंग में रंगने की कोशिश – बीते हुए कल के प्रेतों से छुटकारा पाने की कोशिशों का ही हिस्सा हैं। इन्हीं कोशिशों का अहम हिस्सा था, जब सन 2000 के बाल दिवस (14 नवम्बर) के अवसर पर मानव संसाधन विकास मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फार स्कूल एजुकेशन* जारी किया था। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए विश्वविद्यालय स्तर पर ज्योतिषशास्त्र हस्तरेखा विज्ञान एवं वैदिक गणित की शिक्षा को घुसाने की अहमकाना कोशिश जारी है। इसके साथ ही इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के साथ उद्दंड छेड़खानी भी जारी है

छापा-तिलक और भगवा पटकाधारी कथित ...तक विज्ञानी माननीय जोशी जी द्वारा पिछले बाल दिवस पर एन.सी.ई.आर.टी. (नेशनल काउंसिल फार एजुकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग) की ओर से ऊपर वर्णित हास्यास्पद दस्तावेज जारी किया था। इस दस्तावेज में कहा तो यहां तक गया है कि इस स्तर पर एक विषय के तौर पर इतिहास को ही हटा दिया जाएगा और इसे सामाजिक विज्ञान के वृहत्तर निकाय के एक भाग के तौर पर पढ़ाया जाएगा। इस निर्णय के पीछे कारण यह बताया गया है कि पाठ्यक्रम का बोझ थोड़ा कम करने और इसे प्रभावी और प्रासंगिक बनाने के लिए ऐसा किया गया। लेकिन अफसोस की बात यह है कि जिस "महान" दस्तावेज में ये "महान" सुझाव दिए गए हैं उसकी संघी बौद्धिक टट्टुओं को छोड़कर विभिन्न मान्य बुद्धिजीवियों ने घटिया और चवन्नीछाप अकादमिक सामग्री के लिए खिल्ली उड़ायी है।

दरअसल यह दस्तावेज निरन्तर जारी उन्हीं घृणित प्रयासों में से एक है जो भाजपा नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार 1999 से लगातार कर रही है। इस दस्तावेज के आने से पहले मानव मूल्य की धार्मिकता से जोड़ने के लिए एन;सी.ई.आर.टी का प्रकाशन 'द जर्नल आफ वैल्यू एजुकेशन' को तीखी आलोचना का शिकार हुआ था। इसमें छपे उन साम्प्रदायिक वाक्यों के लिए शिक्षा सचिव एम.के. काव को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग से माफी भी मांगनी पड़ी थी, जिसमें उन्होंने अल्पसंख्यकों के खिलाफ आपत्तिजनक बातें कही थीं। उसी प्रकार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा पण्डिताई सिखाने वाले कोर्स, जैसे वैदिक ज्योतिषशास्त्र और हस्तरेखा विज्ञान (palimistry) को अनुदान देने की भी सर्वत्र निन्दा हुई। इन्हीं संघी साजिशों की श्रृंखला में अगली कड़ी के रूप में ही इस प्रयास को भी देखा जा सकता है। अगले अकादमिक सत्र से इतिहास के नये भगवा पाठ्यक्रम लागू किये जाने की संभावना है। जो पाठ्य-पुस्तकें हटाई जानी हैं उनके लेखकों में रामशरण शर्मा, रोमिला थापर, विपन चन्द्रा, सतीश चन्द्रा जैसे प्रसिद्ध और जाने-माने विद्वान हैं।

इतिहास से जान छुड़ाने के लिए उठाए गए कदमों को सही ठहराने के लिए एन.सी.ई. आर.टी. में बैठे हुए संघ के प्रति निष्ठावान अधिकारीगण *'नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फार स्कूल एजुकेशन'* को एक पवित्र ग्रंथ के रूप में उद्धृत करते हैं। आर.के. दीक्षित को, जो करिकुलम ग्रुप के संयोजक और सामाजिक विज्ञान और मानविकी के विभागाध्यक्ष भी हैं, वितिहासीकरण के लिए उठाए गए कदमों पर हो रहे विरोधों में षडयंत्र नज़र आ रहा है। उनके अनुसार उनके आलोचक इतिहास पर ज्यादा जोर दे रहे हैं। वे कहते हैं कि पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों में किए जा रहे बदलाव *'नेशनल करिकुलम'* के गाइडलाइन्स के आधार पर किए जा रहे हैं। और *'नेशनल करिकुलम'* किए जा रहे बदलावों को इस तरह सही ठहराने का प्रयत्न करता है: **"सामाजिक विज्ञान की शिक्षा को अर्थपूर्ण, प्रासंगिक और प्रभावी बनाने के लिए समकालीन विश्व के सरोकारों और मुद्दों को सबसे आगे रखने की आवश्यकता है। इस रूप में इतिहास के परिमाण को काफी कम किया जा सकता है।"** इस वाक्य से इस दस्तावेज के लेखक की टकसाली समझ नंगी हो जाती है। इतिहास का अर्थ भूत का बयान मात्र नहीं है। इतिहास हमें किसी भी काल विशेष की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक स्थिति के उदय की भौतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के बारे में, उनके स्वरूप के बारे में बताता है। वर्तमान के आधार पर भविष्य का खाका और उसमें निहित सम्भावनाओं के बारे में भी बताता है। लेकिन इतिहास की समझ केसरिया दिमाग की क्षमता से बाहर मालूम पड़ती है। साथ ही यह बात भी समझ में नहीं आती कि भगवा गिरोह को इतिहास के परिमाण से ही खुजली क्यों होती है?

दीक्षित महोदय तो यह भी कहते हैं कि हर छात्र को विशेषज्ञ बनने की क्या आवश्यकता है। दीक्षित महोदय आगे हमें बताते हैं: *"उन्हें एक स्वस्थ समाज का सफल, प्रतियोगी नागरिक बनना होगा ..."* दीक्षित जी के सपनों का भारत आज का अमेरिका और बीते कल का जर्मनी मालूम पड़ता है। मुक्त प्रतियोगिता के पक्षधर दीक्षित जी समान अवसर की नहीं बल्कि 'वैल्यू एजुकेशन' की बात करते हैं। एक छोटे से वर्ग को सूचना तकनीक आधारित शिक्षा देने की बात की जाती है तो दूसरे विशाल वर्ग को आज्ञाकारी औजार बनाने के लिए तकनीकी शिक्षा देने और उनके विद्रोही मन को शांत करने और बागी दिल को आज्ञाकारी बनाने के लिए योग सिखाने की बात की जाती है। इस असमान शिक्षा के बाद

मुक्त प्रतियोगी बनने की सलाह दी जाती है। उनका मानना है कि इतिहास नए समाज की नयी जरूरतों को पूरा नहीं कर रहा। दीक्षित महोदय के अनुसार पुरानी इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में कुछ अल्पसंख्यक समुदायों के बारे में आपत्तिजनक वाक्य हैं और बहुसंख्यक समुदाय के भी कुछ लोगों ने इन पुस्तकों की अन्तर्वस्तु पर आपत्ति की है। यह बहुसंख्यक समुदाय कौन-सा है और उनकी भावनाओं का ठेका किन लोगों ने ले रखा है यह बताने की ज़रूरत नहीं है।

इतिहास के इस विकृतिकरण अभियान के तहत एन.सी.ई.आर.टी. कमेटियों से कुछ इतिहासकारों को बाहर कर दिया गया है। तर्क यह दिया गया है कि कुछ नए चेहरों को लाया जाएगा। लेकिन कारण नयापन मात्र नहीं है। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक जे.एस.राजपूत के आशीर्वाद के साथ बनी एक्सपर्ट कमेटी में शामिल किए गए चेहरे ज्ञात रूप में हाफ पैण्ट, लाठी, काली टोपी वाले सिपाही हैं। इनमें मुख्य हैं एस.पी.गुप्ता, के.एस.लाल, लोकेश चंद्रा, और जी.सी.पाण्डे। इन नामों को तो शायद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दफ्तर के लोग भी न जानते हों लेकिन अब यह केसरिया ब्रिगेड के सिपाही ही तय करेंगे कि हम क्या पढ़ें और क्या न पढ़ें। दीक्षित महोदय का मानना है कि वह इतिहास में विवादास्पद मुद्दे पर कुछ नहीं कहेंगे। जैसे वह यह नहीं कहेंगे कि आर्य मध्य एशिया से आए थे और उन्होंने यहां के मूल निवासियों को भगा दिया था। इस तरह संघ के "बुद्धिजीवी" तथ्यों के साथ बलात्कार की योजना बना चुके हैं। दीक्षित की एक अन्य साम्प्रदायिक विद्वेष से भरे कथन पर गौर करें: *"जो भी कुतुब मीनार सैर करने जाता है वह इसके बारे में जानने के लिए उत्सुक होता है। लेकिन कुतुब मीनार के ही दूसरे ओर कुत्वत उल इस्लाम मस्जिद है। उसके बारे में एक प्रश्न है। आप पढ़ते हैं कि यह मस्जिद 37 हिन्दू और जैन मंदिरों के मलबे पर बनी थी। यह इतिहास निर्विवादित है। मुझे नहीं लगता कि हमें इसकी उपेक्षा करनी चाहिए।"* यह बताने के लिए दीक्षित के दिमाग में बहुत खलबली मची हुई है, इससे राष्ट्र विभाजित नहीं होगा लेकिन यह बताने से कि आर्य मूलत: भारतीय प्रायद्वीप के नहीं थे, राष्ट्र विभाजित हो जाएगा! दीक्षित के पहले

(शेष पृष्ठ 34 पर)

प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. आर.एस.शर्मा की पाठ्य-पुस्तक के साथ छेड़छाड़: भगवा ब्रिगेड का नया कारनामा

भाजपा के सत्तासीन होने के बाद से लगातार प्रसिद्ध और माने हुए इतिहासकारों की पुस्तकों को या तो वापस लिया जा रहा है या उनके साथ बदसुलूकी की जा रही है। नवीनतम उदाहरण है प्राचीन और मध्यकालीन भारत के श्रेष्ठतम इतिहासकारों में से एक प्रो. रामशरण शर्मा द्वारा लिखित कक्षा ग्यारह की पाठ्य-पुस्तक के साथ बदसुलूकी। इससे पहले **पान्चजन्य** के नियमित लेखक अतुल रावत को इतिहास का पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए सलाहकार नियुक्त किया गया था।

इस बदसुलूकी की वजह यह बतायी गयी कि **प्राचीन भारत** नामक ग्यारहवी कक्षा की पुस्तक में प्रो. शर्मा ने तीर्थंकरों की एतिहासिकता पर संदेह व्यक्त किया है जिससे जैन सम्प्रदाय की भावनाओं को "ठेस" पहुंची है। यह पुस्तक पहली बार 1977 में छपी थी, इसके बाद 1980 में इसका संशोधित संस्करण प्रकाशित हुआ। एक नया संस्करण 1990 में छपा। तबसे कई बार इसका पुन: मुद्रण हुआ। इसके बाद भी भगवा ब्रिगेड के समर्पित सिपाहियों, एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक जे. एस.राजपूत और सामाजिक विज्ञान और मानविकी के नए विभागाध्यक्ष आर.के. दीक्षित संतुष्ट नहीं हैं। उन्होंने इस पुस्तक के दसवें अध्याय, जो जैन धर्म और बौद्ध धर्म पर केन्द्रित है, आपत्ति की है। इसमें प्रो. शर्मा ने अनुत्तरित तर्कों सहित अपने संदेह को जायज साबित किया है। प्रो. शर्मा ने लिखा है कि अगर महावीर जैन को चौबीसवां तीर्थंकर मान लिया जाए तो जैन धर्म की उत्पत्ति का समय नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में कहीं माना जाएगा लेकिन उस समय के सभी धार्मिक गुरु गंगा के मैदानों के मध्यवर्ती इलाके में पैदा हुए थे और यह इलाका छठीं शताब्दी ईसा पूर्व से पहले बिल्कुल निर्जन था। प्रो. शर्मा का मानना है कि तीर्थंकरों का मिथ शायद इसलिए खड़ा किया गया कि जैन धर्म की प्राचीनता बढ़ जाए। कुछ लोगों को पुस्तक के इस हिस्से पर कथित आपत्ति के आधार पर पहले इसमें संशोधन प्रस्तावित किया गया। इस बदले हुए संस्करण मे बात सारी वही रखी गयी लेकिन सभी आपत्तिजनक वाक्यों के पहले यह वाक्यांश चस्पां कर दिया गया: "जैन धर्म के अनुयायियों के अनुसार"। इसमें तथ्यों की ऐतिहासिकता बरकरार थी।

लेकिन यह तो था प्रस्तावित संशोधन। फरवरी, 2001 में जो नया संस्करण आया उसमें भगवा ब्रिगेड ने अपनी कारस्तानी कर ही दी। इसमें संशोधन का वह हिस्सा, जिसमें पुरातात्विक प्रमाणों के साथ महावीर के जैन धर्म के संस्थापक होने की संभावनाओं पर जोर दिया गया है, मिटा दिया गया है। इसी प्रकार किताब का एक और हिस्सा संशोधित किया गया। भुवनेश्वर में सामाजिक विज्ञान और मानविकी विभाग में रीडर प्रीतीश आचार्य ने इन कारनामों का विरोध किया और जब उन्होंने और संशोधन करने से इंकार कर दिया तो उनका तबादला कर दिया गया।

इस शुद्धीकरण मुहिम के कई उदाहरण दिए जा सकते हैं। मध्यकालीन भारत पर सातवीं कक्षा की प्रो. रोमिला थापर की पाठ्य पुस्तक और इसी काल पर प्रो. सतीश चन्द्रा द्वारा लिखी गई पाठ्य पुस्तकों पर भी आपत्ति दर्ज करके वही सुलूक करने की तैयारी कर ली गई है।

● शिशिर

इतिहास से भयाक्रान्त...

(पृष्ठ 11 का शेष)

उनके स्थान पर अर्जुन देव थे। वह कहते हैं कि कुत्वत उल इस्लाम के सामने एक सूचना पट्ट पर वह तथ्य लिखा हुआ है जिसे दीक्षित महोदय राष्ट्र को बताना चाहते हैं, उसे किताब में लिखने की आवश्यकता नहीं है। अर्जुन देव ने चिंता व्यक्त की है और कहा है कि इतिहास को साम्प्रदायिकता और मिथकों के अधीन करने का षडयंत्र किया जा रहा है।

जिन पुस्तकों को हटाए जाने का प्रस्ताव है वे हैं **विपन चंद्रा** के *आधुनिक भारत*, **रोमिला थापर** की प्राचीन और मध्य भारत पर पाठ्य पुस्तकें और सतीश चंद्रा की *मध्य भारत*। **रोमिला थापर** कहती हैं: "अगर आप पुस्तकों में संशोधन करना चाहते हैं तो सक्षम इतिहासकारों को ऐसा करने दें। क्या उन्होंने कोई कमेटी बनाई है और क्या उस कमेटी ने इन पाठ्य पुस्तकों के वापस लिए जाने को मान्यता दी है? हम जानना चाहते हैं कि वे विशेषज्ञ कौन हैं और किस आधार पर उन्होंने इन पुस्तकों से पीछा छुड़ाने का निर्णय लिया है। यह कहना कि कोई वैचारिक प्रेरणा नहीं, सही नहीं होगा।" उन्होंने मांग की कि एन.सी. ई.आर.टी. उन एक्सपर्टों की लिस्ट को सार्वजनिक करे जिन्हें पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाने के लिए उसने लगाया है। **प्रो. थापर** ने कहा, "वे जानते हैं कि अगर वे इतिहास को आर.एस.एस. के दृष्टिकोण से नहीं लिखेंगे तो उसे खारिज कर दिया जाएगा। इतिहास का उन्मूलन करने के पीछे एक यह वजह है। .. ये पाठ्य पुस्तकें आदर्श पाठ्य-पुस्तकें थीं और समझ यह थी कि यदि राज्य को उनमें कोई बदलाव करना था तो लेखकों के नाम हटा दिए जाएंगे। ... " हम मार्क्सवादी साहित्य नहीं लिख रहे थे। हम सामाजिक और आर्थिक इतिहास के कुछ विचारों को प्रतिबिम्बित करने की कोशिश कर रहे थे। लक्ष्य था स्तरीय सूचना देना।"

मध्य भारत के प्रतिष्ठित इतिहासकार **प्रो सतीश चंद्रा** आश्चर्य प्रकट करते हैं: "इतिहास तथ्यों के आधार पर लिखा जाना चाहिए या समुदायों की अति भावुकता को ध्यान में रखकर।"

अर्जुन देव ने बताया है कि प्रसिद्ध समाजशास्त्री योगेन्द्र सिंह, भू शास्त्री एजाजुद्दीन अहमद, जिन्होंने बारहवीं की भूगोल की पुस्तक लिखी है, समेत रोमिला थापर, डी.एन.झा, के.एम.श्रीमाली, सतीश चंद्रा जैसे विश्व प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित इतिहासकारों को इस विषय से सम्बद्ध विशेषज्ञों की टीम से हटा दिया गया है।

जो कुछ होने जा रहा है उसकी भयंकरता का एहसास शायद अभी हमें ठीक से नहीं हो पा रहा है। अगर सभी इंसाफपसंद, संजीदा, तर्कपरक और साम्प्रदायिकता-विरोधी छात्र और शिक्षक एकजुट होकर इस भगवा साजिश के खिलाफ संघर्ष नहीं करेंगे तो हमें यह जान लेना चाहिए कि आने वाली सम्पूर्ण पीढ़ी इतिहास की एक विकृत, तोड़ी-मरोड़ी गयी तस्वीर से परिचित होगी। और कहना न होगा कि विकृत इतिहास बोध से सम्पन्न नयी पीढ़ी स्वस्थ मानवीय समाज की वाहक नहीं बन सकती।

...तबाह होता छात्रों-नौजवानों का भविष्य

(पृष्ठ 15 का शेष)

की दिशा में उठती हुई दिख रही, वही शासकों और उनकी व्यवस्था के लिए मरणान्तक होने जा रहा है। इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए। इतिहास का सबक यही है।

जिन करोड़ों नौजवानों के सपने बदरंग हो रहे हैं, आकांक्षाएं धूल-धूसरित हो रही हैं, वे बहुत दिनों तक चुपचाप नहीं बैठेंगे। उनके भीतर सुलग रहा आक्रोश का लावा मुहाने तलाश रहा है और उन्हें वह मुहाना भी देर-सवेर मिल ही जायेगा। क्योंकि यह भी इतिहास का सबक है कि ऐसे ही दौरों में मेहनतकश अवाम के वे बहादुर बेटे-बेटियां आगे आ जाते हैं जो सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं, बगावत का जज्बा जिनके अन्दर हिलोरें ले रहा होता है। सबसे पहले ये नौजवान भगतसिंह का यह आह्वान सुनेंगे, फिर समूची युवा आबादी को यह साफ-साफ सुनायी देगी: **"अगर कोई सरकार जनता को उसके बुनियादी अधिकारों से वंचित रखती है तो उस देश के नौजवानों का यह अधिकार ही नहीं कर्तव्य बन जाता है कि ऐसी सरकार को उखाड़ फेंके या तबाह कर दें।"**

अमेरिकी सत्ताधारियों के हाथ...

(पृष्ठ 9 का शेष)

आतंकवाद को कुचलने के नाम पर जालिम राज्यसत्ताएं सिर्फ यही कर सकती हैं कि व्यापक आबादी को दमन का निशाना बनायें और ऐसा करते हुए वे जनक्रांति को आमंत्रण देने का काम करती हैं।

आतंकवाद विश्व इतिहास की महज एक संक्रमणकालीन परिघटना है। हाल की घटनाओं का एक निहितार्थ यह भी है कि इसी संक्रमण के दौरान भविष्य के रास्ते का नक्शा बनेगा और वित्तीय पूंजी के विनाशकारी विश्व वर्चस्व के विरुद्ध नयी जनक्रान्तियों की रूपरेखा तय होगी। तब तक, जिन आततायी सत्ताओं ने अतीत की जनक्रान्तियों को खून की नदी में

प्रायः जनक्रान्तियां जब पराजित होती हैं, जब गतिरोध और उलटाव के दौर आते हैं, तो जनता में व्याप्त गहरी निराशा की जमीन से, मध्य वर्ग के बीच से ऐसी ताकतें पैदा होती है। इतिहास के रंगमंच पर जब जनक्रान्तियों के वास्तविक नायक नहीं होते तो उन लोगों को भी उत्पीड़ित जनता अपना नायक मान लेती है जो आत्मघाती हदों तक बहादुराना कारनामों द्वारा अन्यायी सत्ता को चुनौती देते हैं।

डुबो दिया और जनता के स्वप्नों, आकांक्षाओं और उपलब्धियों को राख की मोटी परत के नीचे दबा दिया, उन्हें आतंकवादी कहर का कोप भुगतना ही होगा। यह उन्हीं का पाप है। उन्हें ही भुगतना है।

यह त्रासद है कि अमेरिकी शासक वर्ग के साथ ही अमेरिकी जनता को भी काफी विनाश झेलना पड़ रहा है। ऐसा उसने इतिहास में कभी नहीं झेला था। पर्ल हार्बर का विनाश भी इससे छोटा था और वह किसी आतंकवादी ग्रुप ने नहीं, बल्कि एक अन्य साम्राज्यवादी शक्ति ने किया था। लेकिन गौरतलब बात यह है कि इस बार के विनाश के बाद अमेरिका के भीतर भी जनमत अमेरिकी नीतियों को इसके लिए जिम्मेदार मान रहा है और अंधराष्ट्रभक्ति की भावनाओं में बहने के बजाय उन नीतियों को बदलने की मांग करता दीख रहा है। इस रुझान में भविष्य के कुछ महत्वपूर्ण संकेत छिपे हैं।

18 सितम्बर 2001